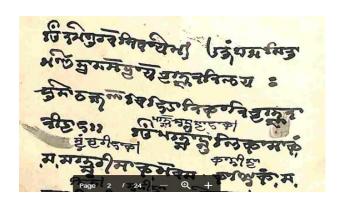
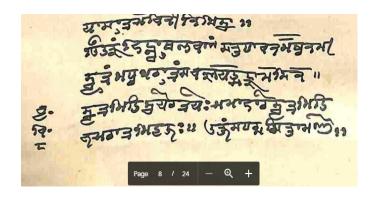
Vyanjana Nirnaya (Dharma Chintamani) - Vrata Vidhi – Phala and Pushpa Nirnaya

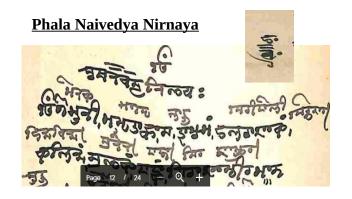
Vyanjana Nirnaya (Dharma Chintamani)



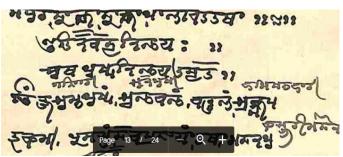


<u>Vrata Vidhi</u>

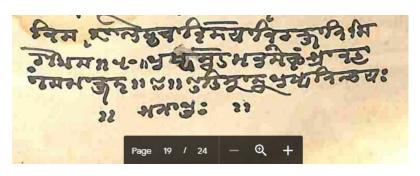
नकुर मुद्रमु भन् भन्तभन्तु दृश्वण्यभा यमा अभिने महामुख्य निक्षा निक्षा मान्य प्राप्त अभिन



Pushpa Nirnaya



Shraaddha Pushpa Nirnaya





रि रेभेगुन्रेभावण्येभी । द्वेषम्भावन भेले द्वारमें स्प्रम्भिनिक्य है मुक्ते ठक्का लागा विकास करित मार्ग की हु। क्रिक्रका है सि हा मुं स्रीजका म,ममुरीम क्राक्स काळ्काम. भाषान्त्री मांगेज्ञी म, उन्ने तीय में भस्त है, मन्त्रे से सक्त में न्त्रीय अप्रदर्श स्मान्यस्य ।

क्नीर्वाचन यन्त्री भुमली रमडभड़िक मीड राधकारी रमडभार के अपनि प्रति मारामिती विकार है मेरी अं द्वारी उल्ला क्रिक्ट म्हम्में भवजन्भ। ५ मिलकं क्रम के म मिन मणा मणा मिन्द्रमें मुक्किन भारती किन्द्रभारतीयाँ, उसार मुक्किन भारती महामानिमान्य (द्याः भड़ लिमाक्सभराक्ष्माहिक्तारः । उद्या अर्थित्रहेम् में क्रमी हैंक भेटलमक्म केललीमक्सेवस १ मरामाल विकास भित्रकामाक्रमज्ञिकत्ययुश्चर्यिष ११ छ॥ बीभ, स्वक मेर्ड के कर विस्त्राहित इंग व्हाम्य क्रुगी सड भुद्धीम देनगी बला रियाभड़ा भच्छ । चुमर् क्यीयन्त्रः विद्यानि उप्रतिस क्रियु "

न्तीभ उंभुग्न दिस्हान उत्तुलीयक्ला मन्द्रे धुन्द्र मस्मि असम्मियंग एडकमा ३ भड़लीयं कित्रल भी हैं स्थान स्थान का कित्रल के किया के ले किया क्षां रलयमामा गुरं करा का मलकारीन्यानी है। ३३ मुस्मलक मिन्छन् लाखाणिनसंगभाद्यां ।। इन मिन्द्रां केत्रा केत्र केत्रा केत्र केत्य केत्र क क्रामा हिन्नुसाम उद्याभा वारिक माल भवम ० मार्किन के कि निर्म श्री में हैं। क्लाक्ष्यः भज्ञह्रक्षः र्भ्याम् ₹ · डक्ट्येः ९ भिक्तार्थ्यमपूर्विम

दिङ्ग बलायड ह्रवयह्न्य क्ष्यम् विकत्यम् वस्त्रम् देवेद्रिः मेड्डिनलयड ३ अन्मेन कराय हुँ मेंन भूगी: इंडिन श्री: इंडिन श्टी: इंडिन श्री: इंडिन श्री: इंडिन श्री: इंडिन श्री: इंडिन श्री: इ नीनक इन इन्लाइ मार्डिनेशाई धक्क इ. मवापड्रम बल्चा । ॥ ॥॥ गलक विमवहार ३११ भारत की मार्क मिना है। महासार कार्म दिया गुणुक्त हो के किया मार्थित मार्थित के किया है नुभग इसी म्भान्त्रकी । नेन्द्रीम्नुध्मान्त्रके म्राम्यक्रिन् । भारति । उन्कें उलगु गुलमक्करी रीन्युणन्द की

किसगुगनदाक्(मुलगुगुलम् कृत्म, उद्या भल्तातम् कृत भी, गुनुल्डा चरुक् कुल्युनुल्भवम ३ हर्मावलंदकी माक्रेम दरलक्षम क भवम भूक्षमानी भूजम दिखा च छे म,उम्राज्यः = रीमाल्यंभरियले, माभ क्रमके उस्ता हमारा के क्रिन्यम् स्मिक् कर्म द्रुता म्बिडिमी भागमा बत्तचारी । स्वक मुङ्कृकृष्ट् सक्त्रसब्द्रभूत्म । उड्ड व्यक्तः शुरू यित्र निणन्डः यर्ममलकनभामग्रहयर्थ। भिम्भवेश्वीभवम् उद्दूष्ट्रम् व - Reहुमीम्स्रिम् कितकिका इ.तम्लेहिन् मक्में सर्विमा लिका 5 । १०उ निहारमुं हें हैं हिल्ह निभाउन स्रीर्या ॥ य॥ क्रमचल्लाम्डामकुन्ड ।। म्बक्कार मूडक्स इस्मामानिह मभचकुउधुममधुपिमुकत्ति । श्रेषु उम्बर्द्धन मुभ्या ब्रिडेक दे भन्मतेन भिष्ट गहुरोग गम्डसाउ मुद्रक्तमुक्त नगुण्यादिकाभागिमः ।। च्छ्या नडक्मीरिकेसमिनिहेले कारणडानि इस्त्र ना निक्रम्य जि उन्निश्चित्रा नेन्ट्र ॥ यहरे विस्थानी: भारतिये के के के के कि कि याद्वमिउङ्ग्रथममेचक्रयेउ। माड्य भ्यम् । स्वास्ट्रिक

क्रमीरिकास स रण्डणीन्ड्यून्गीन शत्त्रमण्ड अस्ति मुभव भाग नेश्व लक्ष्यानी अस मण्य ४५ दिन विद्यान है। इस्मेर विद्या म्मविष्टं श्रुप्य शिष्ठकू भी॥ भग्दाव ब्ह्भगीरीन्ध्रिश ता मुडक्रयमा भव द्वित्रिच्छ्युद्धम सुन्मडे विन्।। र्लीकं , प्राह्म । विलः , इस्मी , कम यानी शिवेदी रण्डिभभुद्रमभ : ॥ मम्याम् मुज्ञ नभ चे हेर् : मड प्रथी विका क्रक्म शुभविनिधितः॥ ॥ ध्रापीर्णः। न्ति द्रिशेषा न्यु नी द्रिश्म । अववडि भुत्तिन्।।। नम्भूष्म । स्वास्थे अवड् निर्मिष्ठं । विस्प याम्ब्रमावनी निश्मक् भ माउद्देश्याम करणे मचण वन्म मुनमी इन् भपु थर निम क्लयक् क्रूप्रम न ॥ मुज्ञीभीड वर्गेन्वयः भभाद्र मुज्ञानि न्भवात्रश्रहम् ।। (ज्ञामण्या वित्रामण्ये।।

りない

विन्द्य कमणम् सुद्रम् मीयुक् भेग्ने भनी हरे इन्टमसी १ मन्मस्य अरी वर्षे अरियम विक्र " यस माम ३१ में १० उड्कारी मुद्धाः मुद्रमु भर्भ भर्तिभ वुड विण्यम्। अनिकसणप्रवाण्य महत्रमीयुक्त्वभव्यक्ति इभागचार्रा ११ यमा अभिन्म द्वारा स्थानिक भारत स्थानिक भानी भूति प्रायुष्टि . यहः संभू मेमिक उर्भिकिभारोप्सिवहर् विश्यम् ११ उसप्यास्त्राधः - सन्त्रभक्षीमङ्गीमङ्गीक अण्यिडस्वम, १ण्डण्नजुर्डण्कुरण्नजुणीके भरीक्षरी " मुक्त्वभीमद्रमीभक्रभीमद्रभीमद्रभी राभड़ी, मुल्मा मही मुक्ते नुक्रिन्सहा :, रामेश्रेड्रिंग्रिंगिशिशः। मुभावश्रेत्राध्ये मकुम्यंथमुडी॥ नकें अक्टिक कें अने असे असे असे असे असे असे श्रम्भू भाषी वर्ष्य स्वीति व के श्रम् अ यक्ष द्वाम मध् ,उम्ब्रीयण्ये द्वा ॥ यक्षे इ.स. मक्र . उस्मड्ड भवद्रस्ता।

नुमन्द्रवास्मा : ११ मन्स्यन्से यहास्या भस्मुग्रुम्भमः, प्रव्यश्यास्त्र द्वा स्ट स्ट अप्राचे । मुझाधडीभा वस्त्र मुख्य उन्हरा हैयो – चूमभमन्द्रमण्ड मम् विमंग्रया समक्र क्रव एक अविमें में नकी हैंड. ११ स्माम्भी - प्रमयभ तर्देमस्म भ्रष्टे स्वराज्या च रावब्र स्वराह्म मध्यक्षिण्डणः भारः ममान्य कार मान्य में महर्मा महर्मी मह मामाइनावभीड्या , इसभिड डवावि मुन्दिन अद्भार्म कृत्या । चन्त्र मं सुस्य मङ्गुमभ्रेशुरिक समीवड नम्डि र्कितमा रणियः ॥ असिक्तारि क्रमेर्ड स्म्यूव्हण भग्यमेर्डिमी त्रीम् मुं श्रुप्तिकार् द्वाराम् ११ मियुग्र भित्रहर्ग्ड ग्रिसियुगः। स्टियं नेग्सियुगः।

क् व

या मड्डिया । उन्त वन्त्र व मा उस्भुतिक्व अस्यः भार्त्रेष्ट ॥ यस्र मही राज उर थायुर्ध भ्रम्री म शुरुषे, भावम महमन्द्रक्तीं। म्बद्धर्ग्ड् अयम्बद्धा उउठ ला गुरुविक् वृष्येचे उठ लाइ, असे आश्चर्यकार्डे भूमध्यी आतम्के नाम अन्मिन् चिरुक् इस मिल्याम् मा थित्र भड्डः कर्ड भुष्यस् ल ५ गुल ३,१ण्ड मन्त्रीमञ्जूष्ट्रम् सम्मास्य सम्य सम्मास्य सम्मास्य सम्मास्य सम्मास्य सम्मास्य सम्मास्य सम्मास्य सम्य कि व अ० र व भिम्मिल भी से व भी मुनिनिक्त्यडी. उडु व्यमसम्योगील म्मस्थानित : अचितिमाम् म्लाम्युंमिक्निम्म्युं मिन्निल किनम् भे दिस् मार्थे अपित मही। थानुगड़ निगयर्म र यह म्या भारित इम्डी , ज्याने । उत्कार के स्टिन्स । अस्ति ।

36 ष्ठमन्त्रेष्ट्र निन्त्य : विमनिक्द निक्यः १एको भूनी भागा ना का मार्गिको है १८को भूनी भागा ना का मार्गिको है १८को मार्गिका मार्गिका मार्गिको मार्गिका मार्ग भागमा नुष्ठ । मगिरानी व्यवस्था मकर् अवग्रिमान्ध्रीं भी । शमनावः विद्याः केत्रमाकः विद्याः विद्य उम् कर्षा पर्मे अमामा राष्ट्रिक ह लभी = माझुग्दा विविद्या में मावि भग्रहास्वम, वहाति रेलाभग्रहारक एक इतिकार क्रिक्टी रेलाभग्रहारक एक विक्तं उसा न वर्ड महरूपमा देने म क्रियां मकक्षीया क्रिक्ट क्रियां क 2.3 यग्रमान्यक्रता व्या व न्या व्या प्रमा उक्ष इत्राम् नवलयुत्रं भीकः अरिक्याक् मीरिक्यां भिक्तः नवलयुत्र् हिंद्राः नवन्त्रव

मेन, न्यवणानः विडिश्वरणः निस्निभीड के का मन्महम्बर्ग १ प्रार रेड, उडरीन्डलरीन, मचक्रामा दुस्तार. क्रममहा का का महारा मानक पीस मानुरा । भवने सका स्माना नीवडेंडस ११७११ अधिनवेडिन्स्टियः ॥ म् ज्यामारिक्यां सं । इस्मान्द्रार्थे स्ट्रिक्स । स्ट् र्क्मा. प्रमुक्त्वधरण्यः उषाः अमन्त्रे भक्ता व नीड हिक्क क्रांस करा अस्मिर्क्सी, क्षानुष्मित्र ्निसी हैं इचित्रम १ गुड्मथे, मिन्स भारत म्यान स्थान स्थान मार्थितम्

चित्र भद्रक्व वित्रुष्ट थं व वलं पडलं अहा भड़ा भड़ा भड़ा भड़ा अवील विद्युष्ट्रध्यंग उद्यान्न अध्य कर्गा, - इश्वेशक्षेत्रका विश्वेश न उड़ाह्म अधी अध्य ने में में केंस ने मार्कियों नित्रमध्यं नगम्भं इवा कुउसगद्भारी धक्वलं मन्द्रमः पहुलं, ज्यानं माया । इस्न, मुन्यभाग शहर्य माना भी उक्ती। जनाजाक्र मधाम हें उनी श्रेश्वामें इस उ भुगद्रक्म अर्थाम् उद्यास दीनितन् कृती भुवत्वस्थे उन्न अस्म अस्म अवस्थे जर्गाहमसे हर्ड देशमा केर्निश्चा भण्यतीज्ञाभाष्यकुत्रभाम्भामस्या ०० रदीयथं, उस्नेत्रवधंमन्त्रलभी न्वग्रु

পূৰ্

AL S. S.C. णमुणारण्यं, जिस्रमे, तीलक्षण्यं मरम ०० न्य जी लाइ वस्ता स्टूब्स से भवण्डियानी भक्रमें करें भीडें कर ग्रें भें के विचम 05 चुवन्तु विशेष्ट्रम्थे, उद्ये वर्गः भ च्यामा अर्थे, इति गरम् मार्थे ०३ ण्युमें भाष्ट्रम्ये सिक्ष ज्याने उवान्यान्ते भेम देश उभुद्ध भाग भाकृती ० द न्तिक भ्रम् के मेर् भ्रम् मुक्त है विचम उस्रिल् के भ्रथम, उन्न के क्रान्ड स्वय ०५ रक्षान्य के विश्व के सं कि विश्व के सं कि विश्व के सं कि विश्व कि सं कि भवनल भर्मा उपमे भूग्रें वर्ग के क्रिया नग्रन्थियमें ड्यान्य असक्सी सर्वेतिसमें मेरे, भरक्सी मंसूडि ०१ वार्षेत्रेनेम् मुरिवास अराज्यकाः म्रीमाउन निभागः

क्रिक्रेम्ड्रम्भामया श्वरावध्यमध्यापा ०४ भिव, जुंद्रांभमंडीम युद्यीव दुक्त की की यवं क्रें दिशक्ति भ न्येंडी क्र मदक्ती (१०) निनई भेरकगईमा इयंग्रीयां हरें भूषः अयोग्नाभाउः भूयंन भाउः हित् ॥ ३० यस्यमुद्रीयथं स्यक्त्रस्यम् ः र्वहर्ग्याम् रहन्त्रभावनायक्रम् १९० र् वया , मयमुनं वित्य गर्मिय करमा न्द्रगीर्या उस्तर्भ्यस्य म्हल्स्य वस्त्र भरत्व ए : 83 गर्भभूति में हेबर से मन्त्रिय निम्ह म भागाउंभव मिरारें भद्देयें पिरिरी दुः ३३ अधाः करवे रणल दर्ग मचयाः उभु ल दम विद्याम् अस्त विक्वित विकार अस् विन्यु अभवम्ब उमण्य श्रीमलक्ष्य डमान्त्रधूमपास्थित्रहिन्द्रस्थितः ३५ अये। वर्षामक् भड़े क्ये उरव्या विभव्या नि मः व्यामक उद्गार्थ के के के वे वे वे वे वे वे वे वे

"राजिभिद्रभुगल— अधावहभस्युर्डेः भड्म भिरातिभागा है: स्माद्वीया निर्मित ्रम्भारताउपिताउः ३१ सम्बन्ध इस्टिश्मि : भाग्यस्यम् विभी, मभी निमाधिर्धितरं म नाक्रेडक्त्रम ३३ करवीर्डायायुड भन्तामं ज्ञाभभाक्ष्मी वनगल्याम्स कन्मवनी ज्ञूस्मानने हिं हिभद्वेगडम मुडे जिन्नाम मड भरिकारी भिरुक्रम्बर्ण्डीमभवध्या मिम्बर ३० क्रीयुध्य उत्रूणयं सुक्त लेई में ठन्मी विस्विविधिव के इन्ड सुन्न हम्मारी, ३० कृत्यं केरियाद्वस्टु रेल कृत्यं केरियाउ निया, बन्मिक्क पुरस्ति मारिक प्रिक्ति स् उन्ह्य शाउउ ११ भर् १०५ — मुम्म नंह दिवर्ण सनीयड्रमायाकारी मुंचामज्यपर मभवनेमक एउस ३३ उउ: ह्यू विह्ये । - अइम्म्याष्ट्रीका

भवपार्यवर्गमुज्ञानक्षाक्रमहर्ग्यः । सन्कर्म बनेश्व हुन्भन्य भित्रभी ३५ वस्तुरमाडमाडमार्सिकामार्स् विक्रियिक्षिक्षेत्र मानिक्षिक्ष विस् प्राउतः । रिश्यक्षीत्र स्टिन् जिल्लीनेन्द्रमाथस्य अर्थनेन्स् स्ट्रास्ट्र क्रिक्ष कर्रन्डम्बर्ग, ग्डान्टकाल रण्डणीन्सस्य मेश्वणीन्स ३उ। सा मन्त्रद्रभ्या भागम् व भवत्त्वर्थे । नुस्त ज्राहर मक्निया वित्रा वर्षे नुस्त ।। न्त्रमिनश्च हुन हुन स्थानमी। क्रिकारी।) गरामुक्काभका उसम्डेमिक्स्युक्युक् मामडीक्रक्रीय मा अंदेरी कर्त्या के भूमा ल मास्मारम श्रीमानग्रायार्थे। वार्गीभ ला हिमड साम ज्ञान व्या १० ग्रिड भए छ भ ज्ञानि - भारतिश्वन ला राड चिक् ए हे भरो द्वीतिश्य क्रिक से गुरा दे भड़े

3000

मन्य भार्थश्रम् वन्नितः मुद्रारम् विः चुनीर राय यस्ति : धारामार्थिय र्डि डि भिविश्वालयुक्त्रीं स्रुम्स्ट्स्र में श्रीव क्रमहों चुमहु उगर्डमा अन्वत्व उसिन्धः असे मिन्नि विकास श-नुसम् स्पृष्वित्रयः ११ गर्रे उथेथ्यद्वणिय्णिन्म इजिनिस्मः मक्नु गुन्क क्या असी का भारति वा भारती वा भारति उत्तर में ती भू कर का र में ते अप भी कर ११ न्यबन्ति ॥ स्डीमन्त्रभाष्ट्र मध्येष्ट्र वेश प्रमुख : उभाइ वध्या ने एडी भर्म निवन्त्यंड =ड मुण्युं इ दिन्यू इंस इन्डीस महमहिका भारतकरिन्यम्थामनिक्याः।भित्रेक्षाः ह भु भू गार्वालनीय जिन्द्र कुला निया विस , राले सुब् रिस्य प्रेन क्रिकी राममा प्रभा द्वार भ उमेर अप विकास is ward:

भूमि गाइमिन्नखं न तुंगालिय इयम्बर्याः क्षामिन्न न स्वारित्र देनमेने इयम्बर्याः न स्वारित्र अरुग्यिति है। उद्यास्त्रयाः न स्वारित्र स्वारित्रे । उद्यास्त्रयाः न स्वारित्र स्वार्थिते । सुर्वे क्षामिन्योः न स्वार्थिते ।







